पुनर्जागरण

नवयुग के अवतरण की सूचना देने वाला तथ्य पुनर्जागरण को प्रायः 'पांडित्य के पुनः उदय' का नाम भी दिया जाता है। इस पुनर्जागरण के समस्त यूरोप में विचारों में क्रान्ति उत्पन्न हुई। जनता का जीवन के प्रति मोह उत्पन्न हुआ। सांसारिक सुखों ने भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। पुनर्जागरण से मध्ययुगीन आडम्बरों, अन्धविश्वासों एवं प्रथाओ को समाप्त किया तथा उसके स्थान पर व्यक्तिवाद, भौतिकवाद, स्वतन्त्रता की भावना, उन्नत आर्थिक व्यवस्था एवं राष्ट्रवाद को प्रतिस्थापित किया।
पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित थीं–

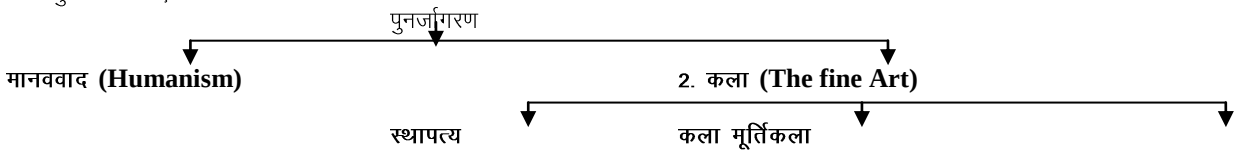

1. मानववाद (Humanism)– हेज के अनुसार, ''नवजागरण की प्रस्तुति मानवतावाद द्वारा हुई'' 'मानवतावाद' का तात्पर्य उन्नत ज्ञान से लिया गया है। दूसरे शब्दों में, मानवतावाद वह धारणा थी जिसने एक ओर तो प्राचीन साहित्य में ही सभी गुण, मानवता, माधुर्य, सौन्दर्य एवं जीवन का वास्तविक सार देखा, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिकता, वैराग्य एवं धर्मशास्त्रों की सार्थकता से स्पष्ट इन्कार कर दिया। इस धारणा को स्वीकार करने वाले मानववादी कहलाए। **प्राचीन यूनानी सभ्यता एवं संस्कृति का पक्षपाती पैट्रार्क** (Petrach) **मानववाद का पिता** (Father fo the Humanism) **कहा जाता है।** माइकेल ऐंजेलो, दोनातेलो, मैकियावेली, फेचिनोपोलियन, पेरूजिना, लियोनार्डो दा विंची, ल्यूका देला रोबिया, फ्रा फिलिप्पो लिप्पी, सैंड्रो बातिचेली, दान्ते एवं अलबर्टी आदि पुनर्जागरण काल के अन्य प्रमुख मानववादी थे। इन मानववादियों ने तत्कालीन समाज की प्रमुख समस्याओं पर कड़ा प्रहार किया।
मनववादियों ने मध्ययुगीन व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाई और धार्मिक विषयों के स्थान पर विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र, इतिहास एवं भूगोल जैसे विषयों के अध्ययन–अध्यापन पर बल दिया, संयोग–वियोग, प्रेम–घृणा, नारी सौन्दर्य एवं दाम्पत्य जीवन जैसी सामाजिक समस्याओं जैसे विषयों को अधिक महत्व दिया न कि मोक्ष को।
2. कला (The fine Art)– हेज के शब्दों में, ''मध्ययुगीन यूरोप की कला मुख्यतः ईसाई धर्म से सम्बन्धित थी'' इस युग की कला शैली को गैथिक शैली (Gathic Art & Style) के नाम से जाना जाता है। धर्म के साथ जुड़े होने के कारण मध्ययुग में कला का अपना कोई स्वतन्त्र एवं पृथक अस्तित्व नहीं था, किन्तु पुनर्जागरण काल में कला के विषयों में परिवर्तन आया। **हेज** ने इसका सबसे बड़ा कारण मानववाद को बतलाया है।

अ. स्थापत्य कला (Architecture)– इटली के कलाकारों ने प्राचीनतम यूनानी एवं रोमन कलाकारों की शैली को पुनर्जीवित करने का जो प्रयास किया उसने मध्ययुगीन गैथिक शैली की ओर से लोगों का ध्यान हटने लगा और एक नई कला शैली का उद्भव हुआ जिसे रेनेसा स्थापत्य कला के नाम से जाना जाता है। **राबर्ट इरगैंग** के अनुसार, ''रेनेसा स्थापत्य कला वास्तव में कोई विशेष अलग एवं विशिष्ट शेली नहीं थी। यह तो कई समूहों की समष्टि थी। इसका स्वरूप व्यक्तिवादी था एवं प्राचीन रोमन यूनानी तथ्यों में इसकी समता पायी जाती है। इसमें मौलिकता एवं नवीनता प्र्याप्त रूप में थी।''

ब. मूर्तिकला (Sculpture)– स्थापत्य कला की अपेक्षा मूर्तिकला के कलाकारों ने यूनानी शैली एवं स्वरूप से अधिक विशेष प्रेरणा प्राप्त की। इटली में रेनेसा मूर्तिकला का पथप्रदर्शक दोनातेलो था। दोनातेलो प्रकृति से अत्यधिक प्रभावित था। उसने प्राचीन आदर्शों की रक्षा करते हुए तत्कालीन बच्चों एवं पूरूषों की अद्वितीय मूर्तियां बनाई। ल्यूका देला रोबिया, वेराकक्यो एवं माइकेल एंजिलो ने जो कि उसके परवर्ती कलाकार थे उसकी मूर्तिकला से एक प्रेरणा प्राप्त की। माइकेल ऐंजिलो द्वारा बनायी गयी कृतियों के उत्कृष्टतम नमूनों को मोसेज एवं फ्लोरेन्स में स्थित मेडिसी के गिरजाघरों की मूर्तियों के रूप में देखा जा सकता है।

स. साहित्य (Literature) –15वीं शताब्दी में इटली के विद्वानों द्वारा प्राचीन एवं लैटिन साहित्य के प्रति उत्कृष्ट रूचि ने इटली में इटैलियन लोक भाषा के विकास में बाधा डाली। **हेज** के अनुसार, ''वे (इटैलियन विद्वान) सोचते थे कि प्राचीन लैटिन एवं यूनानी भाषा ही साहित्यिक प्रस्तुतीकरण का एकमात्र सम्माननीय वाहन है। फलतः वे लोक भाषाओं को असभ्य एवं साधारण मानकर हेय समझते थे।'' इस प्रकार की विचारधारा से अभिभूत विद्वानों ने होरेस, वर्जिल एवं सिसरो की रचनाओं का अनुगमन किया। उनके इस प्रयत्न ने वैज्ञानिक आलोचना के द्वार अनावृत कर दिए। लोनेन्जोवल्ला (Lonenzovalla) ने तो चर्च के प्रति ''कांस्टेंटाइन के दान'' की ऐतिहासिकता को अस्वीकार कर दिया। इतना होते हुए भी लैटिन एवं यूनानी भाषाओं में लिखा गया था साहित्य सामान्य जनमानस की समझ के बाहर था। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि सामान्यजन अशिक्षित एवं रूढ़िवादी होने के कारण इन ग्रन्थों के रहस्यपूर्ण तथ्य को समझने में असमर्थ थे। उल्लेखनीय है कि इस ओर मात्र सुरक्षित वर्ग ही आकृष्ट हुआ, अतः 16वीं शताब्दी में स्थिति में परिवर्तन आया। **हेज** के शब्दों में,''सोलहवीं शताब्दी राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता, दूरस्थ भौगोलिक अविष्कार, पूंजीवादी विकास तथा सामाजिक व धार्मिक अशान्ति से परिपूर्ण थी। लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगी क्योंकि सामान्य जनता कठिन लैटिन व यूनानी भाषाओं के स्थान पर लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य को अधिक पसन्द करती थी।'' अतः राष्ट्रीय एवं लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य का सृजन
सामने आया।

पुनर्जागरण की प्रगति के कारण– मध्य युग में एशिया में मुसलमानों ने प्रभुत्व जमाना प्रारम्भ कर दिया था। इन मुसलमानों में अरब अपेक्षाकृत सभ्य थे, किन्तु क्रूर तथा निर्दयी तुर्कों ने अरबों की शक्ति का दमन कर यूरोप की ओर अपने कदम बढ़ाए। ये तुर्क 1453ई0 में यूनानी भाषा के मुख्य केन्द्र कुस्तुन्तुनियां पर भी अधिकार करने में सफल हुए। तुर्कों ने कुस्तुन्तुनियां के निवासियों पर अत्यधिक अत्याचार किए। हजारो व्यक्तियों को, जिसमें अनेक विद्वान भी सम्मिलित थे, मौत के घाट उतार दिया गया। तुर्कों ने तत्कालीन साहित्य को भी जलाना एवं नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। यूनानी जनता तुर्कों के अत्याचारों से भयभीत होकर यूनान छोड़कर भागने लगी तथा इटली में इन्होंने वसना प्रारम्भ कर दिया। यूनानी अपने साथ अपनी पुस्तकों को भी साथ लेकर गए थे, अतः यूनानियों ने इटली के निवासियों को यूनानी भाषा, संस्कृति, कला एवं आध्यात्मिकता का ज्ञान दिया। इस प्रकार कुस्तुन्तुनियां (Constantinople) के स्थान पर रोम शिक्षा का केन्द्र बन गया। ये विद्वान यूरोप के अन्य देशों में भी पहुंचे और नवीन विचारों से जनता को अवगत कराया। इसके अतिरिक्त विभिन्न देशों के विद्वानों ने रोम पहुंचकर प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया गया तथा उनकी शिक्षाओं का अपने देशों में प्रचार किया।
एक दृष्टिकोण से 'पुनर्जागरण' शब्द अत्यन्त भ्रामक है क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मध्य काल में बौद्धिकता थी ही नहीं, जोकि असत्य है। इसी प्रकार यह मानना कि पुनर्जागरण एकाएक 1453ई0 में हो गया सम्भव नहीं है। पुनर्जागरण वास्तव में मध्य काल में ही प्रारम्भ हो गया। व्यक्तियों की विचारधारा म चौदहवीं शताब्दी में ही परिवर्तन होने लगा था। पन्द्रहवीं शताब्दी में तो यूनानी साहित्य के अध्ययन के उत्साह ने इस आन्दोलन को यह विशिष्ट शताब्दी दिशा प्रदान की और इसके महत्वपूर्ण परिणामों का कारण यह था कि इस विकास के कारण लोग इस बात को समझने लगे थे कि यूनानी साहित्य का उनके समाज के लिए क्या महत्व है। पुनर्जागरण की प्रगति के निम्नलिखित कारण थे–

1. **अविष्कारो एवं खोज का प्रभाव** (Effect of Inventions and Discoveries) –इस पुनर्जागरण की प्रगति में तत्कालीन आविष्कारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल में हुए विभिन्न आविष्कार व नवीन खोजें इस प्रकार थीं:

क. छापाखाना (Press) – 1453ई0 से पूर्व आविष्कारों के अभाव में पुनर्जागरण इतना सफल नहीं हो सका था जितना कि तत्पश्चात् हुआ। इन आविष्कारों में अत्यन्त महत्वपूर्ण आविष्कार छापाखाने का था। 1460ई0 में गुटनबर्ग नामक व्यक्ति से सर्वप्रथम इसको जर्मनी में बनाया था। 1476ई0 में केक्सइन ने इंग्लैण्ड में छापेखाने के प्रयोग को पचलित किया। छापेखाने से विद्या–प्रसार में अत्यन्त सहायता मिली क्योंकि इससे पुस्तकों का अभाव दूर हो गया। इससे पूर्व पुस्तकों को हाथ से ही लिखना पड़ता था। अतः पुस्तकों की संख्या बहुत कम ही रहती थी, तथा उनका मूल्य बहुत अधिक होता था।

ख. कागज (Paper)– आधुनिक युग से पूर्व जानवरों की खालों तथा पेड़ की छालों का प्रयोग लिखने के लिए करना पड़ता था, किन्तु अब एक प्रकार की विशिष्ट घास की खोज की गयी जिससे कागज बनाया जाने लगा जो कि खाल की तुलना में अत्यन्त सस्ती थी। अतः छापेखाने एवं कागज के आविष्कार ने पुनर्जागरण के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ग. बारूद (Gunpowder) – यद्यपि बारूद का प्रचलन यूरोप में पहले से ही था, किन्तु इस समय बारूद का प्रयोग तोप तथा बन्दूक के द्वारा होने लगा, जिससे इंग्लैण्ड के राजाओं ने शक्तिशाली सेना तैयार कर सामन्तों की शक्ति का दमन किया तथा देश में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया।

घ. कुतुबनुमा (Mariner's Compass)– कुतुबनुमा का आविष्कारक इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो था जिसकी सहायता से एशिया के निवासियों ने दूर–दूर देशों की यात्रा एवं व्यापार किया। अब इस कुतुबनुमा का प्रयोग यूरोप में भी प्रारम्भ हो गया जिसने सामुद्रिक यात्रा को सरल बना दिया जिससे व्यापार के अतिरिक्त नवीन विचारों का आदान–प्रदार भी सम्भव हो सका।

2. नवीन भौगोलिक खोजें (New Geographical Discoveries) – मार्कोपोलो द्वारा कुतुबनुमा के आविष्कार तथा उसकी यात्राओं के विषय में जानकर अनेक व्यक्तियों में यात्रा करने का उत्साह संचारित हुआ। कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने दूर–दूर तक यात्राएं कर अनुभव प्राप्त किया तथा नवीन ज्ञान एवं विचारों के प्रसारण में सहायता दी।

3. अरबी अंक (Arabic Numerals)– यूरोप में पहले रोमन अंकों (I,II,III,IV,V) का प्रयोग होता था, किन्तु अरबों के सम्पर्क में आने से अब अरबी अंकों (1,2,3,4,5) का प्रयोग होने लगा जिससे गुणा–भाग आदि करना सरल हो गया।

उपर्युक्त समस्त कारणों के अतिरिक्त इंग्लैण्ड में मध्य युग में कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिसके कारण जनता ने मध्यकालीन विचारों को त्यागकर आधुनिक विचारधारा को स्वीकार किया। ये प्रभावशाली घटनाएं–अकाल, सौ वर्षीय युद्ध, किसानों का विद्रोह तथा गुलाब के फूलों का युद्ध–थीं। इन घटनाओं ने इंग्लैण्ड में जमींदारी प्रथा, सामन्तीय व्यवस्था तथा अन्य मध्ययुगीन कुप्रथाओं को समाप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान किया तथा पुनर्जागरण के रास्ते को साफ किया।

पुनर्जागरण के प्रभाव (Effects of the Renaissance) –प्रायः यह माना जाता है कि पुनर्जागरण एक साहित्यिक क्रान्ति था, परन्तु यह उचित नहीं है। पुनर्जागरण ने जीवन के प्रत्येक पहलू का प्रभावित किया। मानव जीवन की श्रेष्ठता एवं उसका महत्व बढ़ गया। लोग आशावादी होने लगे। भौतिक सुखों एवं मनोरंजनो को भी मानव जीवन के लिए परम आवश्यक माना गया। तत्कालीन कला एवं साहित्य ने मानव जीवन की कठिनाइयों तथा उनको दूर करने के उपायों को प्रस्तुत किया। संक्षेप में, पुनर्जागरण के परिणामों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है:

1. वाणिज्यवादी क्रान्ति (Commercial Revolution)– पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण परिणाम वाणिज्यवादी क्रान्ति के रूप सामने आया। मध्य युग में सामन्तों ने कृषि को ही अर्थव्यवस्था का आधार मान लिया था। अतः स्थानीय उद्योग–धन्धे आवश्यकतानुसार सीमित समय तक यथावत् नहीं बनी रही। पुनर्जागरण काल में हुए नवीन परिवर्तनों ने व्यापारिक विचारधारा को ही परिवर्तित कर दिया। 16वीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप के अनेक देशों एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के कतिपय भागों में सोने व चांदी की खानों की पता चल जाने से आदान–प्रदान के आधार मुद्रा विनियम को अधिक प्रोत्साहन मिलना प्रारम्भ हो गया। मध्ययुगीन वस्तु विनिमय प्रथा अब व्यापार मे बाधक मानी जाने लगी। इस स्थिति में व्यापार एवं उद्योग को नियमित करके सोना एवं चांदी प्राप्त करने की विचारधारा वाले एक वर्ग का उद्भव हुआ। इसे इतिहास में वाणिज्यवादी वर्ग एवं उनकी विचारधारा को वाणिज्यवादी विचारधारा के नाम से जाना जाता है। वाणिज्यवादियों ने नारा दिया **'अधिक सोना, अधिक धन एवं अधिक शक्ति।''** अपने उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वाणिज्यवादियों ने विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने की बात कही। निर्यात में वृद्धि एवं आयात में कमी की नीति का मार्ग बतलाया। कृषि को कच्चे माल का स्रोत मानने पर बल दिया। उनकी इस नीति का इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन एवं जर्मनी में अवलम्बन किया गया। फलतः इन देशों के व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में अभूतपर्व उन्नति हुई। यह स्पष्ट हो गया कि मुद्रा केवल विनियम का माध्यम ही नहीं है, अपितु धन–संचय का साधन भी है। ''इस प्रकार जो व्यापारिक एवं व्यावसायिक परिवर्तन सामने आए उन्हें ही इतिहास में व्यावसायिक/व्यापारिक क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

2. पूंजीवाद के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन (Social & Economic changes of capitalism)–16वीं शताब्दी में यूरोप में पूंजीवाद का जन्म एवं विकास एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना थी जिसने आधुनिक युग को पूर्णतः प्रभावित किया। पूंजीवादी व्यवस्था के परिणामस्वरूप 16वीं सदी में यूरोप के सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। यूरोप में पूंजीवादी कृषि का आरम्भ हुआ। अब सामन्तों ने आधुनिक कृषि पद्धति को स्वीकार किया। सामन्तों द्वारा ही प्रताड़ित अर्द्धदास कृषक सामन्तों के नियन्त्रण से मुक्त हुए तथा मध्यम वर्ग का उत्थान हुआ। अब समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया। प्रथम, धन–सम्पन्न एवं द्वितीय, निर्धन। पूंजीवाद के विकास ने एक ओर औपनिवेशिक पद्धति को तो जन्म दिया, परन्तु साथ ही दास व्यापार का प्रारम्भ भी हो गया जो कि मानव इतिहास का पूंजीवाद की सर्वाधिक घृणित देन है। पूंजीपति वर्ग एवं मजदूर वर्ग में पारस्परिक संघर्ष ने कालान्तर में समाजवाद को जन्म दिया।

राष्ट्रीय व्यापार तथा उद्योग–धन्धों के विकास के लिए अब राज्यों की ओर से विधान प्रस्तुत किए जाने लगे। व्यापारियों के हितों की सुरक्षा के लिए राज्यों द्वारा नियम बनाए जाने लगे। अब पूंजीपति वर्ग राज्य की ओर संरक्षण प्राप्त करने के उद्देश्य से आकर्षित हुए। दूसरी ओर श्रमिक वर्ग भी अपने संरक्षण के लिए राज्य से मांग करने लगा। व्यापार के द्रुतगति से विकास ने यूरोपीय देशों में उपनिवेशों की स्थापना को लेकर भयंकर संघर्ष का आरम्भ कर दिया।

3. साहित्य एवं विज्ञान पर प्रभाव (It Enriched Literature and Science)– मध्यकालीन जनता को विज्ञान तथा राजनीतिक सिद्धान्तों का विशेष ज्ञान था। पुनर्जागरण के समय अनेक विद्वानों के कारण साहित्य में वृद्धि हुई। अनेक पुस्तकें साहित्य एवं विज्ञान पर लिखे जाने तथा पढ़ने का विचार जनता मे जाग्रत हुआ तथा अनेक वैज्ञानिक उपकरणों का आविष्कार हुआ।

4. बौद्धिक प्रभाव (Intellectual effect)– इस आन्दोलन का सर्वाधिक प्रभाव जनसाधारण पर पड़ा। जनता में तर्कवादिता ने जन्म दिया। बिना किसी आधार एवं प्रमाण के अब जनता किसी बात को स्वीकार नहीं करती थी। अन्धविश्वास तथा रूढ़िवादिता का अन्त होने लगा।

5. राश्ट्रीयता की भावना (National Feeling)– यूनानी एवं लैटिन भाषाओं से प्रभावित होकर प्रत्येक राष्ट्र एवं उसके समाज में स्वयं को उन्नत करने की भावना जाग्रत हुई। यूनानियों के समान अपनी भाषा को विकसित करने का प्रयास प्रत्येक राष्ट्र करना चाहने लगा। इंग्लैण्ड के लेखकों ने भी पुनर्जागरण से प्रेरित होकर अनेक रचनाएं की तथा जातीयता एवं राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित किया।

6. इतिहास पर प्रभाव (History Writting)– गोथों तथा हूणों के आक्रमणों ने प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास के मध्य एक खाई बना दी थी। पुनर्जारण के प्रभाव से जनता में पुनः इतिहास लिखने तथा पढ़ने की भावना उत्पन्न हुई। इस प्रकार पुनर्जागरण ने उपर्युक्त खाई पाट दिया। इतिहासकारों ने पुनः वैज्ञानिक ढंग से इतिहास लेखन का कार्य किया।

.7. नवीन उपनिवेशों की स्थापना (Establishment of New Colonies)– पुनर्जागरण के प्रभाव से लोग साहसी हो गए तथा दूर–देशों की समुद्री यात्रा अनेक नाविकों ने की। पुर्तगाल में समुद्री यात्रा के प्रोत्साहन हेतु एक 'नाविक विद्यालय' की स्थापना की गयी। विभिन्न नाविकों द्वारा अपनी समुद्री यात्रा के समय नए–नए प्रदेशों की खोज की गयी। इन नाविकों में कोलम्बस, वास्कोडिगामा, जान कैबर, मैगलेल प्रमुख हैं।

8. कला पर प्रभाव (Rebirth of Art)– पुनर्जागरण से जहां एक ओर साहित्यिक क्रान्ति हुई, दूसरी ओर कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण विकास हुआ। इसका प्रभाव सर्वप्रथम इटली में तथा तत्पश्चात् यूरोप के अन्य राष्ट्रों पर पड़ा। लोगों का ध्यान पुनर्जागरण के पश्चात् लैटिन और यूनानी कला तथा भवन–निर्माण की ओर आकर्षित हुआ। उससे प्रभावित होकर यूरोप के अन्य राष्ट्रों ने भी यूनानी कला के नमूने देखकर नवीन कलाकृतियों का निर्माण किया। उस समय का प्रसिद्ध कलाकार माइकलेंजलो था, जिसने मोसेज तथा डविड की मूर्तियों का निर्माण किया जो कला की दृष्टि से उच्च श्रेणी की मानी जाती है। माइकलेंजलो ने चित्रकला में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। उसने **'लास्ट जजमेण्ट'** नामक चित्र बनाया। माइकलेंजलो के अतिरिक्त लिओनार्डो डा विन्सी, सीटियन आदि प्रसिद्ध चित्रकार उस समय हुए। स्थापत्य तथा चित्रकला के अतिरिक्त संगीत कला में भी विशिष्ट उन्नति हुई।

धर्म सुधार आन्दालन

9, धर्मसुधार आन्दोलन का प्रारम्भ (Paved way for Reformation)– पुनर्जागरण के धार्मिक क्षेत्र में भी गम्भीर प्रभाव हुए। तर्क तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण से जनता के समक्ष पोप तथा चर्च की अनियमितताएं तथा बुराइयां स्पष्ट हो गयीं। विद्वानों ने पोप तथा चर्च पर अपनी लेखनी से प्रहार किया तथा धार्मिक आन्दोलनों के मार्ग को साफ बनाया। इसी कारण कहा जाता है– ''पुनर्जागरण के विद्वानों ने धामिक आन्दोलन रूपी आंधी को जन्म दिया जिसे बाद में धार्मिक आन्दोलन के पिता लूथर ने शक्ति प्रदान की।

धर्म सुधार आन्दोलन (The Reformation)– जिस समय इंग्लैण्ड में **हेनरी अश्टम** और **वूल्जे** यूरोप की राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए निरर्थक
प्रयास कर रहे थे, उसी समय धार्मिक क्षेत्र में एक महान परिवर्तन हो रहा था जिसे धर्म–सुधार आन्दोलन कहा जाता है। यह एक धार्मिक आन्दोलन था जिसे इतिहासकारों ने धर्म सुधार कहा है। मध्ययुग में यूरोप की बर्बर जातियों के आक्रमणों से सुरक्षा करने के उद्देश्य से निमित तथा धार्मिक जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए **रोमन कैथोलिक चर्च** की स्थापना की गयी थी। इस चर्च ने मध्ययुग में सभ्यता के प्रसार के लिए सराहनीय कार्य किए, किन्तु सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक यूरोप की स्थिति में गम्भीर परिवर्तन हुआ। मध्यकाल के अन्त तक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे। गिरजाघर अब भ्रष्टाचार तथा विलासिता के स्थान बनने लगे थे। पोप, जिसकी आज्ञा धार्मिक क्षेत्र मे सर्वोपरि होती थी, स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगे। पोप किसी भी राजा को पदच्युत, किसी भी देश के गिरजाघरों को बन्द तथा किसी भी व्यक्ति को ईसाई धर्म से बहिष्कृत कर सकता था। पोप ने अपनी शक्ति से लाभ उठाना प्रारम्भ कर दिया था तथा वे धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करने लगे थे। इस प्रकार तत्कालीन चच एवं पोप में व्याप्त बुराइयों के विरोध में सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड तथा यूरोप में जो आन्दोलन हुआ, उसे धर्म–सुधार के नाम से जाना जाता है। वास्तव में, यह आन्दोलन यूरोप की धार्मिक प्राचीन रूढ़िवादिता के विरूद्ध था। यद्यपि तेरहवीं शताब्दी से चर्च में कुछ परिवर्तन हुए थे, किन्तु यह परिवर्तन आधुनिक युग की आवश्यकताओं के समान न थे। आधुनिक युग के आगमन से तथा पुनर्जागरण के कारण यूरोप की जनता तर्कवादी हो चुकी थी तथा अन्धविश्वासों को मानने के लिए तैयार न थी। इसी समय कुछ विद्वानों ने पोप की आचारहीनता, भ्रष्टता एवं विलासिता को देखकर जनता को अपने भाषणों एवं लेखों से पोप एवं अन्य पादरियों की वास्तविक स्थिति से परिचित कराया। परिणामस्वरूप जनसाधारण इस बात के लिए अब तैयार न था कि वह अपने धार्मिक कार्यों को इतने भ्रष्ट व्यक्तियों एवं कलुषित तरीको से कराएं। अतः धर्मसुधार आन्दोलन शक्तिशाली होता गया और शनैः–शनैः यूरोप के समस्त देशों में इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। इस आन्दोलन को सफल बनाने में जर्मनी के लूथर का महत्वपूर्ण योगदान रहा। **उसने पोप का घोर विरोध किया तथा एक नवीन सम्प्रदाय को जन्म दिया जिसे 'प्रोटेस्टेण्ट' कहते हैं।** लूथर के प्रयत्नों से पोप तथा तत्कालीन धार्मिक व्यवस्था के विरूद्ध एक तीव्र आन्दोलन उत्पन्न हुआ, जिसके समक्ष पोप की शक्ति स्थिर न रह सकी। इस सन्दर्भ में वार्नर–मार्टिन ने लिखा है, ''धर्म सुधार आन्दोलन पोप पद की सांसारिकता व भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक नैतिक विद्रोह था।''

धर्मसुधार आन्दोलन के कारण– तत्कालीन यूरोपीय समाज द्वारा, लूथर के द्वारा स्थापित मत को तुरन्त स्वीकार कर लेना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि धर्म–सुधार के अनेक कारण थे क्योंकि किसी एक कारण अथवा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किसी मत को एकाएक इतना शक्तिशाली समर्थन प्राप्त होना असम्भव है। अतः धर्म–सुधार आन्दोलन के कारणों को जानने के लिए उस युग की सामाजिक, धार्मिक आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन आवश्यक है, जो कि इस प्रकार है–

(अ) चर्च की बुराइयां (Abuses in the Church)– धर्म सुधार आन्दोलन का सर्वाधिक प्रमुख कारण तत्कालीन चर्च में व्याप्त बुराइयां थी। पोप तथा पादरी, धनी होने तथा किसी प्रकार का प्रतिबन्ध स्वयं पर होने के कारण विलासी एवं भ्रष्ट हो गये थे। उनके भ्रष्ट होने से गिरजाघर भी, जो पवित्र स्थल माने जाते थे, अब भ्रष्टाचार एवं विलासिता के केन्द्र बन गए थे। पहले पादरियों को विवाह करने की अनुमति नहीं थी, किन्तु अब उन पर ऐसा कोई प्रतिबन्ध न होने से वे सांसारिकता के मोहजाल में फंस गए थें। जनता को पादरियों का इस प्रकार का नैतिक पतन पसन्द न था। इसके अतिरिक्त पादरियों पर देश का कानून मान्य न था। उन पर राजा किसी प्रकार से भी मुकदमा नहीं चला सकता था। जहां न्यायाधीश पादरी ही हो। उनको दण्ड भी जनसाधारण की तुलना में बहुत कम मिलता था।
तत्कालीन चर्च में व्याप्त एक अन्य बुराई प्लूरेलिटीज की रीति थी जिसके द्वारा एक पादरी अनेक गिरजाघरों का अध्यक्ष तथा अनेक पदों पर कार्य कर सकता था। इस रीति के कारण गिरजाघरों की व्यवस्था उचित नहीं हो पाती थी तथा पादरियां की अधिक आय होने के कारण उनकी विलासिता में वृद्धि होती थी।
चर्च में व्याप्त उपर्युक्त बुराइयों के अतिरिक्त एक प्रमुख समस्या पोप की थी। पोप ईसाई जगत् का अनधिकृत सम्राट समझा जाता था तथा वह स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझता था। पोप समस्त ईसाई राज्या का संरक्षक होता था तथा प्रत्येक देश में उसने अपने प्रतिनिधि लिगेट तथा ननसियस नियुक्त किए थे जो पोप के अतिरिक्त किसी की आज्ञा को स्वीकार करने को तैयार न थे। अपनी शक्तियों को और अधिक निरंकुश बनाने के लिए पोप के पास दो विशेषाधिकार थे, जिनका प्रयोग कर वह समय–समय पर अपनी निरंकुशवादिता को प्रमाणित करता रहता था। इन विशेषाधिकारों में से एक अधिकार इण्टरडिक्ट था, जिसके द्वारा वह किसी भी देश के एक अथवा समस्त गिरजाघरों को बन्द करने को आदेश दे सकता था। ये एक महत्वपूर्ण अधिकार था क्योंकि गिरजाघरों के बन्द हो जाने से उस देश में जन्म, विवाह, मृत्यु आदि के अवसरों पर होने वाले समस्त धार्मिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लग जाता और जनता को इस प्रकार अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। दूसरा विशेषाधिकार 'एक्सकम्यूनिकेशन कहलाता था। इस अधिकार के प्रयोग से वह किसी भी देश के राजा को ईसाई धर्म से पदच्युत कर सकता था और इस प्रकार उसे उसके पद से हटा सकता था, इन विशेषाधिकारो के कारण प्रत्येक ईसाई देश का राजा तथा जनता, पोप से भयभीत रहती थी तथा उसका विरोध करने का साहस नहीं कर पाती थी। पोप ने इन अधिकारों का प्रयोग इंग्लैण्ड के राजा हेनरी द्वितीय पर किया था। पोप को इन अधिकारों ने निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी बना दिया था। आधुनिक काल के प्रारम्भ होते ही यूरोप के ईसाई देशों में से अनेक देशों की जनता पोप की इस निरंकुशवादिता को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो गयी।
पोप ने स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हुए धन अर्जित करने का भी उपाय ढूंढ़ निकाला था। उसने क्षमा पत्र देने प्रारम्भ किए। कोई भी व्यक्ति अपने आप से मुक्त होने के लिए धन देकर पोप से क्षमा–पत्र प्राप्त कर सकता था। इस प्रकार धनी वर्ग स्वेच्छा से अत्याचार करता था और अपने आप के परिणामों से परलोक से बचने के लिए पोप से क्षमा–पत्र प्राप्त कर लेता था क्याकि पोप ने यह प्रचार कर दिया था कि जो व्यक्ति मृत्यु से पूर्व उससे क्षमा–पत्र प्राप्त कर लेगा, वह मरणोपरान्त स्वर्ग प्राप्त करेगा। इसके अतिरिक्त धन अर्जित करने के लिए पोप प्रत्यक ईसाई राष्ट्र से उसकी वार्षिक आय का एक अंश जिसे ऐनेट्स या फर्स्ट फ्रूट कहते थे, प्राप्त करता था तथा गिरजाघरों में विभिन्न पदों को बेचा जाता था। इस प्रकार पोप ने तथा विभिन्न गिरजाघरों ने अपार सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी। आधुनिक युगीन नेता गिरजाघरों एवं पोप में व्याप्त विभिन्न बुराइयों को समाप्त करना चाहते थे।

(ब) यूरोप के राजाओं की लालसा (Greed of European Princes)– गिरजाघरों की सम्पत्ति, भूमि तेजी से बढ़ रही थी अतः यूरोप के शासकों की गिरजाघरों एवं पोप की सम्पत्ति पर नजर लगी हुई थी तथा उस पर वे अधिकार करना चाहते थे, क्योकि मध्यकालीन यूरोप क राष्ट्र के राजाओं को धन की भारी आवश्यकता रहती थी। अतः वे अवसर की प्रतीक्षा में थे। **रेम्जे म्योर** ने भी धार्मिक आन्दोलन के प्रमुख कारणों में, चर्च में व्याप्त अनियमितताएं तथा यूरोप के राष्ट्रों के राजाओं की गिरजाघरों की सम्पत्ति पर अधिकार करने की लालसा को ही माना ह।

(स) पोप से घृणा (Hatred against Pope)– 1309ई0 में पोप ने अपनी राजधानी रोम के स्थान पर एयुग्नेन बनायी। यह एयुग्नेन फ्रांस की सीमा पर स्थित था। एयुग्नेन, पोप की राजधानी 1378ई0 तक रही, किन्तु इस लगभग सत्तर वर्ष के समय का तत्कालीन धार्मिक एवं राजनीतिक

स्थिति पर व्यापक प्रभाव पड़ा। पोप के एयुग्नेन रहने से पोप पर फ्रांस के राजा का प्रभाव बढ़ गया जिससे यूरोप के ईसाई राष्ट्र जो फ्रांस के शत्रु थे पोप से नाराज हो गए तथा उससे घृणा करने लगे। इसी कारणवश इंग्लैण्ड के शासक एडवर्ड तृतीय ने पोप एवं गिरजाघरों के अधिकारों को इंग्लैण्ड में कम करने का प्रयत्न किया। 1378ई0 में पोप के सम्मान को गम्भीर आघात लगा क्योंकि उस समय दो पोप हो गए तथा एक दूसरे को नास्तिक कहने लगे। यह स्थिति 1417ई0 तक रही, जिससे पोप का आत्मसम्मान यूरोप में कम हो गया तथा उसकी शक्ति में पतन होने क लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

(द) राश्ट्रीय भावना का प्रभाव (Influence of National Spirit)– पोप के प्रभाव के कारण लोगों को अपने देश के नियम के स्थान पर पोप के आदेशों को स्वीकार करना पड़ता था। आधुनिक युग के उदय के साथ ही प्रत्येक देश में राष्ट्रीय भावना का जन्म हुआ और जनता में यह भावना जाग्रत होने लगी थी कि पोप एक विदेशी था, अतः पोप के प्रभाव को समाप्त करने का प्रत्येक देश का कर्तव्य हो गया। जनता अपने देश के प्रति वफादार रहना चाहती थी। जनता देश को धर्म को धर्म एवं गिरजाघरों से अधिक महत्वपूर्ण समझने लगी थी।

(य) पवित्र धर्म की आव□यकता (Need of a Pious Religion)– प्रारम्भ में ईसाई धर्म एक सुन्दर और पवित्र धर्म था। उसमें किसी प्रकार की अपवित्रता व्याप्त नहीं थी, किन्तु शनैः–शनैः उसमें बुराइयां तथा अन्धविश्वास बढ़ने लगा। अतः आधुनिक यग के आगमन तथा पुनर्जागरण के प्रभाव से अब लोग ऐसे धर्म को अस्वीकार करने को तैयार न थे तथा एक नवीन धर्म की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे।

(र) पुनर्जागरण का प्रभाव (Impact of Renaissance)– पुनर्जागरण के कारण लोग तर्कवादी हो गये थे। अतः वे पर्याप्त प्रमाण के अभाव में किसी सिद्धान्त
अथवा बात को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। पुनर्जागरण का इस कारण धार्मिक क्षेत्र में गम्भीर प्रभाव पड़ा। बाइबिल का अनुवाद राष्ट्रीय भाषाओं में किया गया तथा छापेखाने के अविष्कार के कारण बाइबिल का पढ़ना सुगम हो गया। यूरोप के अनेक धर्म–सुधारक इटली गए तथा अपने देश लौटकर पोप एवं धर्म में व्याप्त बुराइयों से जनता को अवगत कराया। इस प्रकार पुनर्जागरण ने धर्म–सुधार आन्दोलन को रास्ता दिखाया।

(ल) धर्म–सुधारकों द्वारा पोप का विरोध (Hostility of Reformaers)– यूरोप में समय–समय पर अनेक धर्म–सुधारक हुए जिन्होने तत्कालीन पोप एवं गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को जनता के समक्ष रखा। इन धर्म–सुधारकों में एक प्रसिद्ध नाम वाइक्लिफ (Wycliff) का है। वाइक्लिफ इंगलैण्ड में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। एडवर्ड तृतीय के समय उसने गिरजाघरों के विरूद्ध आवाज उठाई तथा जनता के समक्ष धर्म पर व्याप्त राजनीतिक प्रभाव तथा उसके दुष्परिणाम रखे। वाइक्लिफ ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिससे लोग उसका वास्तविक अर्थ समझ सके तथा पादरियों द्वारा गुमराह होने से बच गए। वाइक्लिफ ने राजा को गिरजाघरों में व्याप्त भ्रष्टाचार का कारण धन बताया तथा उसे सुझाव दिया कि गिरजाघरों एवं धर्म को पुनः पवित्र बनाने के लिए उनके धन एवं सम्पत्ति पर अधिकार कर लें।
वाइक्लिफ (Wycliff) के पश्चात् उसके अनुयायी उसके सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे। दूसरा प्रमुख धर्म–सुधारक वोहेमिया में जान हुस हुआ। हुस, प्राग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। उसने नवीन विचारों का प्रचार किया, जिसके परिणामस्वरूप 1415ई0 में उसे जीवित जला दिया गया। यद्यपि जान हुस की मृत्यु हो गयी, किन्तु उसके सिद्धान्त जीवित रहे। तीसरा धर्म–सुधारक सेवोनैराला इटली में हुआ, उसे भी मृत्यु–दण्ड दिया गया।